गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/ICD/1252/2012-2014

मासिक
गोलालारीय दर्शन

अपनों के साथ अपनी बातें

golalariya_darshan@yahoo.in
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com

लेट पोस्टिंग

जो भरा नहीं हैं भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। हृदय नहीं पत्थर हैं वो, जिसे समाज से प्यार नहीं।

वर्ष : 6 अंक : 5 पृष्ठ संख्या : 12 माह – 15 दिसम्बर 2014 सहयोग राशी – आजीवन सदस्य बनें ।

मोरपंखी अनुभ

पावागिरीजी में...

प्रकाशपर्व के बाद अगहन की पंचमी को बुंदेलखंड की पावन भूमि पावागिरी में पांच दिवसीय उत्सव एक विशाल मेले की शक्ल लेता जा रहा है। प्राकृतिक सौंदर्य से भरा, चेलना नदी के निकट, पहाडी के शीर्ष पर स्थित एक प्राचीन इमारत, आँखों के लिए सुखद बहुत ही खूबसूरत सभी दिशाओं में पहाड़ियों से घिरा क्षेत्र जहां पू. स्वर्णभद्र, गुणभद्र, मणिभद्र, वीरभद्र मुनिराज की मोक्ष स्थली, पार्श्वप्रभु एवं भूरे बाबा के लिए ख्यात इस स्थल पर स्थापित मानस्तंभ दूर से ही दिखाई देने लगता है, मार्ग में जैसे ही पावागिरी का संकेत पत्थर दिखाई देता है मन उल्लास और श्रद्धा से भर जाता है। सडक के दोनो किनारों पर गाडियों की कतारें, तरह तरह की छोटी बडी दुकानें, मिट्टी व लोहे के घरेलू उपयोगी बर्तन श्रद्धालुओं का मन मोह लेते है।

जैसे ही क्षेत्र के परकोटे में प्रवेश करते है शहनाई की मधुर लहरियाँ लोगों का स्वागत करती है, जो कि मिट्टी की आदमकद मूर्ति बजाती है आप को पढकर निश्चय ही आश्चर्य होगा तो आप स्वयं क्षेत्र पर जाकर इसका आनंद उठाइये। मंदिरों के शिखर जिन पर स्वर्ण की आभा वाले कलश और जैन धर्म की पताका फहरा रही है मन को रोमांचित कर देते है।

आगे बढ़ने पर कितने ही परिचित स्वर और चेहरे दिखाई सुनाई देने लगते है मेल मिलाप करते हुए पार्श्वप्रभु से मिलने की इच्छा बलवती होती जाती है, प्रांगण में एक पेड़ के पास सामान रखकर प्रभु दर्शन के लिए हमारा कारवां चल पडा ।

कुछ सीढ़ियां चढ़ते ही लंबी सी कतार दिखाई दी जो 150 साल पहले भूगर्भ में स्थापित मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान के दर्शनों के लिए थी अपनी बारी के इंतजार में कई रिश्तेदारों और परिचितों से भेंट होती रही। साढे तीन फीट छोटे दरवाजे से लगभग दोहरे होते हुए जब गर्भगृह में जाते है तो सामने ही पार्श्वप्रभु के दर्शन पाकर सफर की थकान दूर हो जाती है। मन भक्तिभाव से भर जाता है गर्भ गृह में आदिनाथजी, अजितनाथजी, संभवनाथजी, नेमीनाथजी की काले पत्थर से निर्मित प्रतिमाएं विराजमान है, जो लगभग 1293 विक्रम संवत में स्थापित की गई होगी । लोगों की मान्यता है कि यहां सच्चे मन से भक्ति करने पर इच्छित फल की प्राप्ति होती है।

निकास द्वार पर क्लोज सर्किट टीवी के माध्यम से भूगर्भ की सभी गतिविधियां प्रदर्शित होती रहती है, भूगर्भ मंदिर के अलावा चौबीसी के दर्शन का लाभ श्रद्धालुओं ने पूरे मनोयोग से करते है । कुछ सीढ़ियां चढ़ने के उपरांत 750 साल पहले देवपत खेवपत द्वारा निर्मित एक गुफा दिखाई देती है जिसे लोग भूरेबाबा के निवास स्थान के रूप में जानते है जो कि रक्षक देव है यहां अपना इच्छित फल पाने के लिए लोग श्रीफल चढाते है।

पहाडी पर ही मोक्ष गये मुनिराजों की चरण वंदना करते है वहीं दूसरी ओर खड्गासन चौबीसी का निर्माण कार्य जोरों से चल रहा है। क्षेत्र में विराजमान प.पू. वात्सल्य मूर्ति मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज को श्रीफल भेंट कर मेले का शुभारंभ किया गया। प्रतिदिन नित्यमय पूजन, अभिषेक श्रद्धापूर्वक संपन्न हुए। मुनिश्री ने धर्मसभा को संबोधित कर कहा कि 'शिक्षा से पहले संस्कार, व्यापार से पहले व्यवहार और परमात्मा से पहले परिवार' का विशेष ध्यान रखना चाहिए। पिच्छिका परिवर्तन समारोह बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। रात्रि में विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। अगले दिन भक्तामर मंडल की ओर से निर्वाण लाडू चढाकर निर्वाण महोत्सव मनाया गया। मेले के चौथे दिन भव्य शोभायात्रा के समापन पर मुनिश्री ने पावागिरी क्षेत्र की महिमा व अतिशय का वर्णन कर कहा कि ''अपने जीवन की यात्रा पर विराम लगाने के लिए श्रीजी की यात्रा में जरुर आना चाहिए''। रात्रि में मां जिनवाणी दि. जैन पाठशाला, बबीना द्वारा रंगारंग कार्यक्रम पेश किया गया। मेले के अंतिम दिन भव्य रथ यात्रा में सैकड़ो श्रद्धालुओं ने बढ चढ़कर भाग लिया। मुनिश्री के आर्शीवचन के पश्चात श्रीजी का कलशाभिषेक संपन्न हुआ। आस-पास के क्षेत्र तथा दूरस्थ नगरों से पधारें कई गणमान्य समाजजनों ने इस अद्भुत क्षण का आनंद लेकर पार्श्व प्रभु से प्रार्थना कि अगले वर्ष हमें फिर बुलाना । इस वर्ष भी वंदना के लिए आये साधर्मी बंधुओ के लिए श्री अशोककुमारजी जैन (शांति सीड्स) भोपाल की ओर से भोजन की व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानचंद पुरा एवं आभार जयकुमार कंधारी ने व्यक्त किया।

पावागिरीजी सिद्धक्षेत्र यानि धर्मध्यान, तीर्थवंदना के साथ साथ ही सामाजिक सरोकार का स्थान भी रहा है। वर्षों से यहां पर विवाह संबंधी चर्चा व रिश्ते तय होते रहे है। गत 6 वर्षों से गोलालारीय दर्शन पत्रिका के प्रतिनिधि प्रतिवर्ष आकर विवाह योग्य प्रत्याशियों के बायोडाटा एकत्रित कर पत्रिका में निरंतर प्रकाशित करते आ रहे है। यह पत्रिका लगभग 4500 परिवारों को प्रेषित की जा रही है। पत्रिका के माध्यम से लगभग 70-75 संबंध तय हुए है और अनेक परिवारों को विवाह योग्य प्रत्याशी का परिचय इसके माध्यम से प्राप्त हो रहा है। क्षेत्र पर बहुत से साधर्मी बंधु अपने विवाह योग्य प्रत्याशियों के बायोडाटा व कुंडली लेकर आते है लेकिन ऐसा कोई मंच उन्हें अभी तक नही मिल पाया है जहां पर वे इस संबंध में चर्चा व मेल मिलाप कर सके। कुछ लोग अपने विवाह योग्य बच्चों को इसी उद्देश्य से लेकर आते है कि योग्य प्रत्याशी मिल जाये और आगे बात बढ़े।

मेरा आप सभी से अनुरोध है कि इस गंभीर विषय पर शीघ्र ही और सार्थक कदम उठाने की जरुरत है। मेले में एक दिन का समय परिचय सम्मेलन के लिए निश्चित कर इसकी विस्तृत रुपरेखा तैयार करना चाहिए। आगामी वर्षों में मेले के समय में विवाह योग्य प्रत्याशी विशेषांक का प्रकाशन कर वितरण करने की कार्य योजना गोलालारीय दर्शन के माध्यम से बनाई जा रही है। इसके प्रचार प्रसार के लिए हम सभी को मिलजुलकर साथ देना होगा ताकि भविष्य में पावागिरीजी को परिचय सम्मेलन के साथ सामूहिक विवाह स्थल के रुप में विकसित किया जा सके जो हमारी विलुप्त होती परम्परा को पुर्नजीवित कर ओर अधिक सुदृढ़ बनाकर समाजजनों को लाभांवित कर सके। इसके लिए गोलालारीय दर्शन का संपादक मंडल सदस्य सर्वश्री कोमलचंद जैन, बाहुबली जैन, राजेन्द्र जैन 'बागो', दैनिक विश्व परिवार के संपादक श्री प्रवीण कुमार जैन, राजेश जैन बीड़ीवाले झांसी, भोपाल के श्री अशोककुमार जैन शांति सीड्स, श्रीमती साधना सुनील जैन, गंजबासौदा के शांतिकुमार जैन, विदिशा के श्री कन्छेदीलाल जैन, ताहबेहट के विशाल जैन, बीना के सलिल जैन, ललितपुर के श्री चंपालाल जैन एवं श्री कैलाशचंद जैन से परिचय पुस्तिका व परिचय सम्मेलन के संबंध में चर्चा कर जुलाई 2015 से विवाह योग्य प्रत्याशियों की जानकारी एकत्रित कर नवम्बर 2015 में आयोजित पवाजी के मेले में पुस्तिका के रुप में विमोचन कर वितरित करने का विचार किया गया है।

पावागिरी सिद्धक्षेत्र अपने आप में बहुत ही अनूठा है । आप इसके आयोजन में भागीदार बने, नई कार्ययोजना पर विचार कर सहयोग करे। छोटी छोटी परेशानियां और शिकायतों को छोडकर हम सभी को सामूहिक प्रयासों के द्वारा पावागिरी क्षेत्र को प्रदेश, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति तक पहुंचाना है। ऐसा केवल सामूहिक प्रयासों द्वारा ही सम्भव है।

किसी एक का काम नहीं, नहीं किसी एक का नाम ।
मिलजुल कर ही कर सकते है, हम अच्छे अच्छे सुंदर काम ।।

अतिथि संपादक – साधना जैन, आकाशवाणी, भोपाल
स्थानीय प्रतिनिधि – विशाल जैन पवा

गोलालारीय दर्शन समाज के 4500 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है। संभव है डाक व्यवस्था या आपका पता सही न होने के कारण पत्रिका आपको व आपके रिश्तेदारों तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें या 9424013136 पर दोप. 4 से रात्रि 10 तक संपर्क कर सकते है या अपने पता का एसएमएस कर सकते है।